ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 223-226
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

भारतीय दर्शन में आत्मा सम्बन्धित विचार

डॉ0 कृष्णचन्द्र चौरसिया
एसोसिएट प्रोफेसर–संस्कृत, श्री भगवान महावीर पी0जी0 कालेज, पावानगर (फाजिलनगर), कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -mayashankarpbh@gmail.com

सारांश : *आत्मा भारतीय दर्शन के महत्त्वपूर्ण प्रत्ययों (विचारों) में से एक है। यह उपनिषदों के मूलभूत विषय–वस्तु के रूप में आता है। जहां इससे अभिप्राय व्यक्ति में अन्तर्निहित उस मूलभूत सत् से किया गया है जो कि शाश्वत तत्त्व है तथा मृत्यु के पश्चात् भी जिसका विनाश नहीं होता है। आत्मा का आकार कितना है, यह स्पष्ट रूप से कृष्णयजुर्वेद के श्वेताश्वतरोपनिषद्1 में कहा गया है।*

बाल के नोक के सौवें भाग को पुनः सौ भागों में कल्पन किया जाये तो उसका स्वरूप समझना चाहिए और वह असीम भाव वाला होने में समर्थ है। यहां आत्मा के सम्बन्ध में "कल्पितस्य" शब्द का प्रयोग किया गया है जो सौवें भाग को पुनः कल्पना किया जाये, उसका जो एक भाग होता है वह आत्मा है। अतः आत्मा का आकार स्पष्ट बताना सम्भव नहीं है। आत्मा दिब्य है और उसका आकार सुक्ष्म जैसा है, अणु जैसा है। आत्मा सुक्ष्म या अणु नहीं है। इस आत्मा का निरूपण श्रीमद्भगीता में इस प्रकार किया गया है–

कुंजीभूत शब्द– भारतीय शिक्षा प्रणाली, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक संरचनाओं, आचार–व्यवहार, मनोवृत्ति।

नैनं छिन्दति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूतः।।[2]
वासांसि जीर्णोनि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।[3]

अर्थात् आत्मा को शस्त्र से काटा नहीं जा सकता, अग्नि उसे जला नहीं सकती, जल उसे गीला नहीं कर सकता और वायु उसे सुखा नहीं सकती। जिस प्रकार मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नये वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा पुराने शरीर को त्याग कर नवीन शरीर धारण करता है। यही नहीं, सभी ज्ञानी पुरूषों ने एक मत से यह स्वीकार किया कि आत्मा अजर–अमर है। आत्मा सनातन है। आत्मा एक उर्जा का रूप है, जिसे ज्ञान और परमात्म ज्ञान के समय देखा जा सकता है। ईसाई धर्म 'चर्च' आफॅ जीसस क्राइसट आफ लैटर–डे सेंटर' सिखाता है कि आत्मा और शरीर मिलकर मनुष्य की आत्मा का निर्माण करता है। आत्मा और

शरीर मनुष्य की आत्मा है। कुरान इस्लाम की पवित्र पुस्तक है। यह आत्मा को संदर्भित करने के लिए दो शब्दों का उपयोग करती है–रूह और नफ्स। यहां रूह का तात्पर्य आत्मा, चेतना। नफ्स का तात्पर्य स्वयं, अहंकार, मानस। यहाँ दोनों शब्दों को एक दुसरे के स्थान पर प्रयोग किया जाता है। हालाकि रूह का उपयोग दिव्य आत्मा या जीवन की सांस को दर्शाने के लिए किया जाता है।4 वेद, पुराण और गीता के अनुसार आत्मा अजर अमर है। आत्मा एक शरीर धारण कर जन्म और मृत्यु के बीच नए जीवन का उपभोग करता है और पुनः शरीर के जीर्ण होने पर शरीर छोड़कर चली जाती है। आत्मा का यह जीवन चक्र तब तक चलता रहता है जब जक कि वह मुक्त नहीं हो जाती या उसे मोक्ष नहीं मिलता। आत्मा के तीन स्वरूप माने गये है– जीवात्मा, प्रेतात्मा और सूक्ष्मात्मा। जो भौतिक शरीर में वास करती है उसे जीवात्मा कहते है। जब इस जीवात्मा का वासना और कामनामय शरीर में निवास होता है तब उसे प्रेतात्मा कहते है। यह आत्मा जब सूक्ष्मतत्म शरीर में प्रवेश करता है, उसे सूक्षतात्मा कहते है।

भौतिक दृष्टिकोण से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने ऐकन्तिक एंव आत्यान्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र का उद्भावन किया है, वह दर्शनशास्त्र है। दर्शनशास्त्र का मूलमंत्र है– आत्मानं विद्धि अर्थात आत्मा को जानों। पिण्ड ब्रह्माण में ओत–प्रोत हुआ एकमेव आत्मतत्त्व का दर्शन कर लेना ही मानव जीवन का अन्तिम साध्य है–ऐसा वेद कहता है। उसके लिए तीन उपाय है– **वेदमंत्रो का श्रवण, मनन और निदिध्यासन।**

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्योः मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।
मात्या तु सततः ध्येय एते दर्शन–हेतवे।। अथ च
आत्मा वाऽरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्वा विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्।।5

चार्वाकदर्शन के अतिरिक्त प्रायः सभी दर्शन सांख्यदर्शन, योगदर्शन, न्यायदर्शन, वैशेषिकदर्शन, पूर्वमीमासा, उत्तर मीमांसा, जैनदर्शन एवं बौद्ध दर्शन आत्मा की सत्ता में विश्वास करता है। भारतीय मनीषी महात्माओं ने आत्म ज्ञान को ब्रझज्ञान भी कहा है। वैदान्त आदि में ज्ञान को आत्मा का स्वास्थ्य माना जाता है किन्तु वैशेषिक दर्शन के अनुसार ज्ञान आत्मा का अगन्तुक गुण है। अन्नं भट्ट वैशेषिक मत

का सारसंग्रह करते हुए यह बतलाया कि ज्ञान का जो अधिकरण है, वहा आत्मा है। वह दो प्रकार का है–जीवात्मा और परमात्मा। जीवात्मा शरीरधारी होता है जबकि परमात्मा कभी भी शरीर धारण नहीं करता।

कठोपनिषद् में वैवस्व यम ने नचिकेता के तृतीय वर ''मृत्यु के पश्चात आत्मा की सत्ता'' विषयक प्रश्न के उत्तर में आत्मा का विस्तार से वर्णन करते हुए बतलाया है कि आत्मा सुक्ष्माति सूक्ष्म अर्थात अणु परिणाम वाला है।6 सभी जीवों में आत्मा एक सा रहता है अतः उसे सम्भालना सर्वसाधारण के वश की बात नहीं है। आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में संग्रमण करती है। ब्रह्म का यथार्थ ज्ञान होने पर आवागमन चक्र समस्त हो जाता है। आत्मतत्त्ववेत्ता महर्षियों ने आत्मा के जीवात्मा और परमात्मा के रूप में दो भेद किये है और दोनों को छाया तथा आतप के समान बतलाया है। कठोपनिषद् में रथ के रूपक के माध्यम से शरीर को एक निर्जीव रथ, बुद्धि को सारथी मन को लगाम एंव आत्मा की रथ का स्वामी बतलाकर इस शरीर में आत्मा की प्रधानता का वर्णन है–

आत्मानं रथिनं विद्धि, शरीर रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथिं विद्धि, मनः प्रग्रहमेव च।।
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विवियांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रिय मनो युक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणेः।।[7]

अर्थ च–

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मा महान् परः।।
महतः परमव्यक्तमव्यम्तात् पुरूषः परः।
पुरूषान्न परं किचिंत् सा काष्ठा सा परागतिः।।
एषः सर्वेषु भूतेषु गूढ़ोत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रया बुद्धया सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।।
यच्छेद् वाड् मनसी प्रज्ञस्तद् यच्छेज्ज्ञान आत्मनि।
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्तद् यच्छेच्छान्त आत्मनि।।[8]

अर्थात शरीर युक्त आत्मा व्यक्त महत्तत्व है और शरीर मुक्त आत्मा ही अव्यक्त है, प्रकृति है। इस अव्यक्त से पर ईश्वर, परब्रह्म या पुरूष है। सांख्यदर्शन में इसे 'ज्ञ' की संज्ञा दी गई है यह पुरूष की प्रधानता की सीमा है। परगति है यही सच्चिदानन्द, धन अक्षर ब्रह्म है। परपुरूषार्थ के रूप में इसी पुरूष को प्राप्त करना वर्जित है। समस्त प्रणियों में छिपा हुआ यह आत्मा दिखलाई नहीं देता है किन्तु सूक्ष्म तत्व द्रष्टा मनीषियों के द्वारा एकाग्रता से तीव्र एवं सूक्ष्मदर्शणी दृष्टि से यह आत्मा देख लिया जाता है। ध्यान विधि से परमात्मा की प्राप्ति सूलभ है। अतः क्रमशः इन्द्रियों को मन में, मन को बुद्धि में, बुद्धि को आत्मा में और आत्मा को परमात्मा में लगाकर एकाग्र चिंतन करें। यद्यपि जैनविचारणा में आत्मा को रूप, रस, गन्ध, वर्ण, स्पर्श आदि से विवर्जित कहा गया है, तथापि आत्मा को शरीराकार स्वीकार किया गया है। आत्मा के आकार के सम्बन्ध में प्रमुख रूप से दो दृष्टियां है– एक के अनुसार आत्मा विभु (सर्वव्यापी) है। इसरे के अनुसार अणु है। सांख्य, न्याय, अद्वैत वेदान्त में आत्मा को विभु बतलाया गया है। रामानुज अणु मानते है। इस प्रकार आत्मा के सम्बन्ध में भारतीय दर्शनों की विचारधाराएं उल्लेखनीय है–

मीमांसादर्शन– मीमांसादर्शन भारतीय षड्दर्शनों में एक है। जिसमें वेद के यज्ञपरक वचनों की व्याख्या की गयी है। उसे पूर्वमीमांसा में धर्म का विचार और उत्तरमीमांसा में ब्रह्म का विचार किया गया है। मीमांसा दर्शन के अनुसार जितने जीव है उतनी आत्माएं है। आत्मा अमर है तथा शरीर भिन्न है। चैतन्यता आत्मा का स्वरूप गुण नहीं है अपितु औपाधिक गुण है। जब शरीर तथा विषयों का आत्मा के साथ संयोग होता है तो चैत्न्य की उत्पत्ति होती है। आत्मा कर्त्ता भी है और भोक्ता भी है। भट्टमीमांसक आत्मा में क्रिया के अस्तित्व को मानते है। इनके अनुसार आत्मा में स्थान परिवर्तन नहीं होता है अपितु रूप परिवर्तन अवश्य होता है। आत्मा में चित् और उचित दो अंश होते है। चिदंश से आत्मा ज्ञान का अनुभव करता है और अचित् अंश से परिमाण को प्राप्त करता है।

'एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति' – इस वेदांश द्वारा व्यक्त होता है कि वेदों में एकेश्वरवादी विचारों का चिन्तन किया गया है। इस अद्वैतवादी विचारधारा में आत्मा और ब्रह्म का तादात्म्य स्थापित किया गया है। उनके अनुसार ईश्वर के रूप में जो परमसत्ता है वही विश्वात्मा है। समस्त देवगण इस विश्वात्मा शरीर के अंग है।

न्याय–वैशेयिक दर्शन में आत्मा–विचार– यह दर्शन आत्मा को अचेतन द्रव्य मानता है। इसमें चेतना आवश्यक गुण के रूप में नहीं रहती। चेतना आत्मा का आकस्मिक लक्षण है। जब आत्मा का सम्पर्क मन से, मन की सम्पर्क इन्द्रियों से और इन्द्रियों का सम्पर्क बाह्य पदार्थ से होता है, तभी उसमें चेतना जैसा गुण उत्पन्न होता है। जब आत्मा को शरीर से छुटकारा मिल जाता है, तब वह अचेतन हो जाती है। न्याय–वैशेषिक दो प्रकार की आत्मा में विश्वास रखती है–जीवात्मा एवं परमात्मा। जीवात्मा सभी मनुष्यों एवं जीवों में रहती है और परमात्मा एक निरपेक्ष असीम एवं नित्य है।

न्यायदर्शन आत्मा का स्वरूप शरीर, इन्द्रिय, मन और विज्ञान के प्रवाह से सर्वथा पृथक मानता है। न्यायदर्शन से चेतना आत्मा का एक आगन्तुक गुण माना गया है न कि उसका स्वरूप। आत्मा की अनुभूति प्रत्यक्षतः नहीं होती

बल्कि कतियय प्रमाणों के आधार पर आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार किया जाता है। आप्तवचन अथवा शब्द आत्मा के ज्ञान का साधन है। आत्मा के प्रत्यक्ष गुण इच्छा, राग, देष, सुख–दुःख प्रयत्न, बुद्धि आदि ऐसे है, जिनकी कम से कम अनुभूति प्रत्यक्षतः हो जाती है। नव्यन्याप का कथन है कि मानस प्रत्यक्ष के द्वारा आत्मा का साक्षात् सम्भव है।

सांख्य–योग में आत्मा–विचार– सांख्यदर्शन 'पुरूष' को शुद्ध चैतन्य सवरूप स्व प्रकाश, नित्य, साक्षी, द्रष्टा, निर्गुण निर्विकार तथा ज्ञान एवं अनुभव का अधिष्ठान मानता है। यह पुरूष का वास्तविक स्वरूप है, जो बन्धन, संसरण और मोक्ष की कल्पनाओं से सर्वदा अस्पृष्ट है। जब पुरूष बुद्धि में प्रकाशित अपने प्रतिबिम्ब को ही अपना असली स्वरूप मान लेता है, तब वह बद्धजीव प्रतीत होने लगता है। यह जीव प्रमाता और भाक्ता है। जन्म, मृत्यु, इन्द्रिय आदि का प्रतिनियम जीवों में सिद्ध होता है और जीव अनेक माने जाते है। बन्धन, संसरण, और मोक्ष जीवों के होते है।

योग–प्रतिपादित ईश्वर एक विशेष पुरूष है, वह जगत् का कर्त्ता, धर्ता, संहर्ता एवं नियन्ता नहीं है। असंख्य नित्य पुरूष तथा नित्य पुरूष तथा नित्य प्रचेतन प्रकृति स्वतंत्र तत्त्वों के रूप में ईश्वर के साथ–2 विद्यमान है।

चार्वाकदर्शन में आत्मा–विचार– चार्वाकदर्शन एक प्राचीन भारतीय भौतिकवादी नास्तिक दर्शन है। यह मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है तथा पारलौकिक सत्ताओं को यह सिद्धान्त स्वीकार नहीं करता है। सर्वदर्शन संग्रह में चार्वाक का मत दिया हुआ मिलता है। पद्मपुराण में लिखा है कि असुरों को बहकाने के लिए बृहस्पति ने वेदविरूद्ध मत प्रकट किया था। नास्तिक मत के सम्बन्ध में विष्णुपुराण में लिखा है कि जब धर्मबल से दैत्य बहुत प्रबल हुए तब देवताओं ने विष्णु के यहां पुकार की। विष्णु ने अपने शरीर से मायामोह नामक एक पुरूष उत्पन्न किया जिसने नर्मदा तट पर दिगम्बर रूप में जाकर तप करते हुए असुरों को बहकाकर धर्ममार्ग में भ्रष्ट किया। मायामोह ने असुरों को जो उपदेश दिया वह सर्वदर्शन संग्रह में दिये गये चार्वाक मत के श्लोकों से बिलकुल मिलता है।

लिंगपुराण में त्रिपुर विनाश के प्रसंग में भी शिवप्रेरित एक दिगम्बर मुनि द्वारा असुरों के इसी प्रकार बहकाए जाने की कथा लिखी है, जिसका लक्ष्य जैनों पर जान पड़ता है। बाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड में महर्षि जावालि ने रामचन्द्र को बनवास छोड़ अयोध्या लौट जाने के लिए जो उपदेश दिया वह भी चार्वाक के मत से बिलकुल मिलता है। चार्वाक के अनुसार भूतों के उस विलक्षण संयोग से जो उत्पन्न होता है, उसे जीवित शरीर कहा जाता है। चार्वाकदर्शन में आत्मतत्त्व के अस्तित्व को ही अस्वीकार ही नहीं करता अपितु पारमार्थिक अस्तित्व को भी अस्वीकार कर देता है। उनके अनुसार शरीर से पृथक आत्मा का कोई अस्तितव नहीं है। चेतना युक्त शरीर ही आत्मा है। अधिकतर कहा जाता है कि मैं लंगड़ा हूँ, मैं मोटा हूँ, इत्यादि सारे कथनों से सपष्ट होता है कि आत्मा शरीर और इन्द्रियों से अभिन्न है। शरीर और इन्द्रिय के सिवाय आत्मा और कुछ नहीं है। अतः इसे देहात्मवारी कहा जाता है। इसके अनुसार प्रतयक्ष ही ज्ञान प्राप्ति का मान साधन है, आत्मा कभी प्रत्यक्ष नहीं होती है।

बौद्धदर्शन में आत्मा–विचार– बौद्धदर्शन के अनुसार परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रत्येक वस्तु सतत परिवर्तन होती रहती है। आत्मा को चेतना का प्रवाह कहा है। बुद्ध क्लेशों का मूल आत्मा को मानते है। आत्मा को मान लेने पर काम जागरित होता है। काम एक समुद्र है जिसका कोई अन्त नहीं है। जितनी उसकी पूर्ति की जाती है यह अधिक से अधिक बढ़ता जाता है सब प्राणियों को अपना आत्मा ही सबसे प्रिय है।

प्रिय वस्तु की प्राप्ति के लिए और उसकी रक्षा के लिए इच्छा होती है और प्राणी उद्योग के चक्र में फंसता चला जाता है। भगवान बुद्ध ने सोचा कि क्यों न आत्मा के अस्तित्व को ही नकार दिया जाये। जब काम का आधार ही नहीं रहेगा तो काम कहाँ रहेगा। समस्त उद्योग आत्मा के लिए ही तो है। जब आत्मा ही नहीं रहेगा तो काम स्वयंमेव समाप्त हो जोयेगा।

काम मोक्ष का सबसे प्रबल शत्रु है। काम एक आग है जो समग्र प्रणियों के ह्रदयों को जलाता है। इसी काम को नाश करने के लिए बुद्ध ने तप किया और विजित किया। अस्तु का के इस दुरूत्र बल को देखकर बुद्ध ने काम का नाश करने के लिए आत्मों के अस्तित्व को ही छिन्न करने का संकल्प लिया। इस प्रकार बुद्ध अनात्मवादी हो गये।

बौद्धदर्शन के अनुसार आत्मा स्कन्धात्मक अर्थात् समूहात्मक है। यह समूह पांच तत्त्वों का है रूप, विज्ञान, वेदना, संज्ञा, और संस्कार। इन्ही पंच स्कन्धों का नाम जीव है। यह समूहात्मक आत्मा परिवर्तनशील है। क्षण–2 बदलती रहती है।

जैनदर्शन में आत्मा–विचार– जैनदर्शन में आत्मा और जीव को एक ही अर्थ में स्वीकार किया गया है। जीव का आवश्यक गुण चैतन्य है। चैतन्य सभी जीवों में पाया जाता है। जैनदर्शन आत्मा को परिणामी मानता है, जबकि सांख्य एवं शांकर वेदान्त आत्मा को अपरिणामी (कूटसथ) मानते है। यहां आत्मा को अपरिणामी मानने का तात्पर्य–आत्मा

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

में कोई विकार परिवर्तन या स्थित्यन्तर नहीं होता।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वालाग्रशतभागस्य शतधा कल्पितस्य च।
भागो जीवः स विज्ञेयः स यान्त्याय कल्पते।।
श्वेताश्वतारोपनिषद 5.9.
2. श्री मद्भगवद्गीता 2/23.
3. श्री मद्भगवद् गीता 2/22.
4. कुरान 17.85.
5. बृहदराण्यकोपनिषद् 2/4/5.
6. कठोपनिषद् 1/2/8, 12, 23.
7. कठोपनिषद् 1/3/10–13.

*****